मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2021 marumegh
ISSN:2456-2904

अनार की उन्नत खेती से कमाएं अधिक आमदनी

पुष्पा कुमावत[1], शैलेन्द्र कुमार[2]एवं डॉ. निधि[3]

[1] एवं [3] कृषि विज्ञान केन्द्र, अठियासन, नागौर
[2] मरू क्षेत्रीय परिसर–केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर

अनार उपोष्ण जलवायु का फल वृक्ष है। यह सूखा सहनशील होने के साथ–साथ कम लागत में अधिक आमदनी देता है। भारत में अनार की खेती मुख्य रूप से महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, कर्नाटक में की जाती है। अनार एक महत्त्वपूर्ण फल है तथा इसका रस स्वादिष्ट तथा औषधीय गुणों से भरपूर होता है। बाजार में अनार की कीमत अच्छी होने की वजह से किसान इसकी खेती की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

जलवायु एवं मृदा :– अनार उपोष्ण जलवायु का पौधा है तथा पाला व शुष्कता के प्रति सहिष्णु है। यह अर्द्ध शुष्क जलवायु में अच्छी तरह उगाया जा सकता है। फलों के विकास एवं पकने के समय गर्म एवं शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है जिससे उत्तम गुणवत्ता के फल लगते हैं। अगर लम्बे समय तक उच्च तापमान होता है तो फलों में मिठास बढती है। आर्द्र जलवायु से फलों की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा यह उष्ण एवं उपोष्ण जलवायु में सदाबहार रहता है। इसकी खेती समुद्रतल से 500 मीटर से अधिक ऊँचे स्थानों पर की जा सकती है। अनार विभिन्न प्रकार की मृदाओं में उगाया जा सकता हैं परंतु अच्छे जल विकास वाली रेतीली दोमट मिट्टी सर्वोतम होती है। अनार के पौधे 6.0 डेसी साइमन्स प्रति मीटर (dSm-1) तक की मृदा लवणीयता तथा 6.78 प्रतिशत विनिमयशील सोडियम (ESP) को सहन कर सकते हैं।

उन्नत किस्में :–अनारक की उन्नत किस्मों में नरमबीज (सॉफ्ट सीडेड) वाली किस्में हैं।

1. गणेश – इस किस्म के फल मध्यम आकार के बीज कोमल तथा गुलाबी रंग के होते हैं। यह महाराष्ट्र की मशहूर किस्म है।
2. मृदुला – यह किस्म गणेश एवं गुल–ए–शाह किस्म के संकरण की एफ–1 संतति के द्वारा महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी, महाराष्ट्र से विकसित की गई है। फल मध्यम आकार के चिकनी सतह वाले गहरे लाल रंग के होते हैं। एरिल गहरे लाल रंग की बजी मुलायम, रसदार एवं मीठे होते हैं।
3. भगवा (सिन्दूरी) – इस किस्म के फल बड़े आकार के भगवा रंग के चिकने चमकदार होते हैं। एरिल आकर्षक लाल रंग की एवं बीज मुलायम होते हैं।

4. जालोर सीडलेस – सामान्यता राजस्थान में उगाई जाती है, सूखा सहनशील है तथा क्षारीय भूमि में उपयुक्त है।
5. जोधपुर रेड – राजस्थान की सूखा सहनशील किस्म है, लेकिन फल फटने की समस्या से ग्रस्त है।
6. अन्य किस्में फुले अरकता, कन्धारी, मस्कट, ज्योति, जी.के.वी.के.–1, पी–26, सुपर भगवा इत्यादि है।

प्रवर्धन :–अनार में प्रवर्धन दो तरीकों से किया जाता है जो इस प्रकार है –

1. **कलम द्वारा** – अनार के पौधे में एक साल पुरानी शाखाओं से 20–30 से.मी. लम्बी कलमें काटते हैं तथा उन्हें पौध शाला में लगा दिया जाता है। अनार की कलमों को इन्डोल ब्यूटारिक अम्ल (आई.बी.ए.) 3000 पी.पी.एम. से उपचारित करने से जड़ें शीघ्र एवं अधिक संख्या में निकलती है।
2. **गूटी द्वारा** – अनार के प्रवर्धन की व्यावसायिक विधि गूटी दाब है तथा इस विधि द्वारा जुलाई–अगस्त में एक वर्ष पुरानी पेंसिल सामान मोटाई वाली स्वस्थ, ओजस्वी, परिपक्व, 45–60 से.मी. लम्बाई की शाखा का चयन करते हैं। चुनी गई शाखा से कलिका के नीचे 3 सेमी. चौड़ी गोलाई में छाल पूर्णरूप से अलग कर देते हैं और जिस शाखा से छाल निकाली गई है उस शाखा के ऊपरी भाग में आई.बी.ए. 10,000 पी.पी.एम. का लेप लगाकर नमी युक्त स्फेगनम मास चारों ओर लगाकर पॉलीथीन शीट से ढककर सुतली से बाँध देते हैं। जब पॉलीथीन से जड़ें दिखाई देने लगें उस समय शाखा को स्केटियर से काटकर क्यारी या गमलों में लगा दें।

पौध लगाने की विधि –

पौध लगाने का अच्छा समय वर्षाकाल रहता है परंतु सिंचाई का समुचित प्रबंध है तो अनार के पौधे फरवरी–मार्च में भी लगाए जा सकते हैं। पौध रोपण की आपसी दूरी मृदा का प्रकार एवं जलवायु पर निर्भर करती है। बाग लगाने के लिए वर्गाकार विधि सबसे आसान व सुगम है। अनार के लिए गड्ढों का आकार 0.75×0.75×0.75 मीटर रखें एवं दो गड्ढों के बीच की दूरी 5×5 मीटर (400 पौधे प्रति हैक्टेयर) या 4×4 (625 पौधे प्रति हैक्टेयर) रखें। गड्ढे खोदते समय ऊपर की आधी मिट्टी एक तरफ एवं शेष आधी मिट्टी को दूसरी तरफ डाल दें। खुदाई के पश्चात् गड्ढों को 20 से 25 दिनों तक तेज धूप में खुला छोड़ दें, जिससे मिट्टी में उपस्थित कीड़े मकोड़े मर जाएंगे। गड्ढा खोदते समय ऊपर की जो आधी मिट्टी अलग रखी थी, उसमें लगभग 20 से 25 किलोग्राम अच्छी तरह सड़ी गली गोबर की खाद, 1 से 1.5 किलोग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट, 500 ग्राम नीम की खली के साथ 50 से 100 ग्राम एम.पी.डस्ट 2 प्रतिशत चूर्ण या क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण अच्छी तरह से मिलकर भर दें। गड्ढों को जमीन की सतह से 15 से 20 सेमी. ऊपर तक भर दें एवं व्यवस्थित होने के लिए छोड़ दें। 2 से 3 बारिश के पश्चात् जब मिट्टी नीचे बैठ जाए उसके बाद रोपण का कार्य प्रारम्भ करें।

खाद एवं उर्वरक

देशी खाद सुपरफॉस्फेट की पूरी मात्रा एवं यूरिया की आधी मात्रा फूल आने के करीब 6 सप्ताह पूर्व देवें। यूरिया की शेष आधाी मात्रा फल बनने पर देवें।

आयु वर्षों में	मात्रा किलोग्राम प्रति पौधा में			
	गोबर की खाद	युरिया	सुपर फॉस्फेट	म्यूरेट ऑफ पोटाश
1	8.10	0.10	0.25	0.50
2	16.20	0.20	0.50	0.50
3	24.30	0.30	0.75	1.00
4	32.40	0.40	1.00	1.50
5 वर्ष और उसके बाद	40.50	0.50	1.25	1.50

सिंचाई :–अनार के पौधे सूखा सहनशील होते हैं। परंतु अच्छे उत्पादन के लिए सिंचाई आवश्यक है। मृग बहार की फसल लेने के लिए सिंचाई मई के मध्य से शुरू करके मानसून आने तक नियमित रूप से करना चाहिए। प्रथम सिंचाई पौधों के रोपण के तुरंत पश्चात कर दें और उसके बाद गर्मियों में 7 से 10 दिन के अंतराल पर और सर्दियों में 15 से 30 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। बरसात के मौसम में यदि बारीश नहीं होत है तो आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहना चाहिए साथ ही जल भराव वाले क्षेत्रों में जल निकास की भी उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

सधाई एवं काट–छाँट :– अनार के पौधे में अनेक शाखाएं निकलती है। यदि ये समय–समय पर नहीं निकलती है तो अनेक मुख्य तने बन जाते हैं। इससे उपज में तथा गुणवत्ता में प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अनार की उपज तथा गुणवत्ता के अनुसार प्रतयेक पौधे में 3 से 4 मुख्य तने ही रखना चाहिए तथा बाकि तनों को समय–समय पर निकालते रहना चाहिए।

अनार के पौधे में 3 से 4 साल तक एक परिपक्व शाखा के अग्र भाग से ही फूल व फल निकलते रहते हैं। इसलिए काट–छाँट आश्यक नहीं हैं। लेकिन सूखी रोगग्रस्त टहनियों तथा सकर्स को सुशुप्ता अवस्था में निकालते रहना चाहिए।

बहार नियंत्रण :–बहार नियंत्रण के लिए जिस बहार से फल लेने हो उसके फूल आने से दो माह पूर्व सिंचाई बंद कर देनी चाहिए।

बहार	फूल आने का समय	तुड़ाई का समय	विशेषताएं
अम्बे बहार	जनवरी–फरवरी	जुलाई–अगस्त	अधिक उपज
मृग बहार	जून–जुलाई	नवम्बर–जनवरी	पानी की कमी वाले क्षेत्रों में उपयुक्त व कीट बीमारियों का प्रकोप ज्यादा रहता है
हस्त बहार	सितम्बर–अक्टूबर	फरवरी–मार्च	फल उच्च गुणवत्ता वाले

तुड़ाई एवं उपज :– अनार के फल पूर्ण रूप से पक जाएं तभी पौधे से तोड़ना चाहिए। पौधों में फल लगने के बाद 120–130 दिन बाद तुड़ाई करनी चाहिए। पूर्ण रूप से पके हुए फल पीलापन लिए लाल रंग के हो जाते हैं। अनार के पौधे रोपण के 2–3 वर्ष पश्चात् फलना शुरू कर देते हैं। लेकिन व्यावसायिक रूप से उत्पादन पौध रोपण के 4–5 वर्षों बाद ही लेना चाहिए। अच्छी तरह से विकसित पौधा 60–80 फल प्रति वर्ष 25–30 वर्षों तक आसानी से देता है।

श्रेणीकरण :– अनार के फलों के वजन, आकार एवं बाहरी रंग के आधार पर अनार के फलों को निम्नलिखित श्रेणियों में रखा जाता है।

1. सुपर साईज :– इस श्रेणी के अंतर्गत चमकदार लाल रंग के बिना धब्बे वाले फल जिनका भार 750 ग्राम से अधिक हो आते हैं।

2. किंग साईज – इस श्रेणी के अंतर्गत आकर्षक लाल रंग के बिना धब्बे वाले फल जिनका भार 500 से 750 ग्राम हो आते हैं।
3. क्वीन साईज – इस श्रेणी के अंतर्गत चमकदार लाल रंग के बिना धब्बे वाले फल जिनका भार 400–500 ग्राम हो आते हैं।
4. प्रिंस साईज – इस श्रेणी के अंतर्गत पूर्ण पके हुए लाल रंग के 300 से 400 ग्राम के फल इस श्रेणी में आते हैं।
5. शेष बचे हुए फलों को दो श्रेणियों 12–ए एवं 12–बी के अंतर्गत आते हैं। 12–बी के अंतर्गत 250–300 ग्राम भार वाले फल जिनमें कुछ धब्बे हो आते हैं।

भंडारण :– अनार के फलों को शीत गृह में 5 डिग्री सेल्सियस तापमान पर 2 माह तक भण्डारित किया जा सकता है।

****